द् ववेदी युग

इस युग की क वता में वषय की दृष्टि से अपार वै वध्य एवं नवीनता आई। द् ववेदी जी के प्रयत्नो से खड़ी बोली काव्य की मुख्य भाषा बन गई।

द् ववेदी युग की क वताओं में खड़ी बोली का प्रचलन प्रतिष्ठित में था। इस युग की जितने भी क व लेखक एवं साहित्यकार थे उन सभी नें ब्रजभाषा को छोड़कर खड़ी बोली को अपनाया और उसी में अपने लेख लखें। इस युग में एक ओर खड़ी बोली को ब्रजभाषा के समक्ष काव्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठत कया गया तो दूसरी ओर वक सत चेतना के कारण क वता नई भू म पर संचरण करने लगी। आचार्य महावीर प्रसाद द् ववेदी की प्रेरणा एवं वात्सल्यमय प्रोत्साहन के परिणाम स्वरूप अनेक क व सामने आए जो उन्हीं के आदर्शों को लेकर आगे बढ़ें। इस युग के महत्वपूर्ण क वयों में मै थलीशरण गुप्त, अयोध्या सह उपाध्याय, श्रीधर

द् ववेदी युग की प्रमुख वशैषताएँ

1) देश प्रेम की भावना

सांस्कृतिक पुनर्त्थान के परिणाम स्वरूप राष्ट्रीयता द् ववेदी युग की प्रधान भावधारा थी। अंत: इस युग की क वता का मुख्य स्वर भी राष्ट्रीयता ही है। इस युग के प्राय: सभी क वयों ने देशभक्ति पूर्ण क वताओं का प्रणयन कया। उन्होंने पराधीनता को सबसे बड़ा अ भशाप बताया तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के लए क्रांतिकारी एवं आत्मा की प्रेरणा दी। रामनरेश त्रिपाठी अपने खंडकाव्य में परोक्ष रूप से परतंत्रता के बंधन काटने का संदेश देते हैं इस प्रकार की रचनाओं में गुप्त जी की 'भारत भारती' श्रेष्ठ और सशक्त रचना है। कतने वश्वास के साथ भारत भारती का भारतवर्ष की श्रेष्ठता की घोषणा करता है-

भूलोक का गौरव प्रकृति का पुण्य लीला स्थान कहां

फैला मनोहर गरि हिमालय और गंगाजल जहां

- मै थलीशरण गुप्त

गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' की क वताओं में भी देशभक्ति की लहर दिखाई देती है। उदाहरण से स्पष्ट है

"जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अ भमान है।

वह नर नहीं नर पशु निरा है और मृतक समान है।"

द् ववेदी युग की प्रमुख वशेषताएँ

2) नीति और आदर्श

द् ववेदी युगीन काव्य आदर्शवादी और नीतिपरक है। इतिहास पुराण से गृहीत कथा प्रसंगो के आधार पर अथवा कल्पना श्रत कथाएं लेकर आदर्श प्रबंध अनेक काव्य लखे गए सभी में असत्य पर सत्य की वजय है दिखाई गई। स्वार्थ, त्याग, आत्मगौरव आदि कछ आदर्शों की प्रेरणा दी गई है। हरिऔध कृति प्रया प्रवास, मै थलीशरण गुप्त की साकेत, रंग में भंग, राम नरेश त्रिपाठी कृत मलन आदि आदर्शवादी रचनाएं हैं। इस प्रकार के पद्य लेखकों में महावीर प्रसाद द् ववेदी, अयोध्या सह उपाध्याय, मै थलीशरण गुप्त आदि प्रमुख है। प्रेम की महिमा निम्न पंक्तियों में व्यंजित है-

गंद वहीन फूल है जैसे चंद्र चंद्रिका हीन।

यों फीका है मनुष्य का जीवन प्रेम वहीन।।

द् ववेदी युग की प्रमुख वशेषताएँ

3 सामाजिक समस्याओं का चत्रण

यह युग सुधारवादी युग भी कहलाता है। इस युग के क वयों ने सामाजिक समस्याओं, यथा – दहेज प्रथा, नारी उत्पीड़न , छूआछूत, बाल ववाह आदि को अपनी क वता का वषय बनाया।

प्रतापनारायण मश्र नारी के वैधव्य जीवन और बाल वधवाओं की तरुण अवस्थाओं को देखकर रो पडते हैं-

''कौन करेजा नहीं कसकत, सुनी वप त्त बाल वधवन की।''

नारी की दयनीय दशा का चत्रण मै थलीशरण गुप्त जी करते हुए कहते है क-

''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।

आँचल में है दूध और आँखों में पानी।।''

द् ववेदी युग काव्य धारा ने उपे क्षत नारियों को अपने काव्य में स्थान दिया। 'यशोधरा' के माध्यम से गौतम बुद्ध की पत्नी को, 'साकेत' के माध्यम से उ र्मला का, ' वष्णु प्रया' के माध्यम से चैतन्य महाप्रभु की पत्नी का उत्सर्ग भाग योजित कया है।

''सखी वे मुझको कहकर जाते,

प्रयतम के प्राणों को पल में स्वयं सुसज्जित करके।

भेज देती रण में, छत्र धर्म के नाते

सखी वे मुझको कहकर जाते।।

अयोध्या संह उपाध्याय 'हरिऔध' ने 'वैदेही वनवास' और ' प्रयप्रवास' के माध्यम से नारी उपेक्षाओं को उठाने की को शश की है।

द् ववेदी युग की प्रमुख वशेषताएँ

4 इतिवृत्तात्मकता

इतिवृत्तात्मकता का अर्थ है वस्तु वर्णन या आख्यान की प्रधानता। आदर्शवाद तथा बौद् धकता की प्रधानता के कारण द् ववेदी युग के क वयों ने वर्णन प्रधान इतिवृत्तात्मकता को अपनाया। इतिवृत्तात्मकता के कारण इस युग में इतिवृत्त (कथा) पर अ धक बल दिया जाने लगा और प्रबन्धात्मक रचनाएँ अ धक लखी जाने लगी।

मै थलीशरण गुप्त की रचनाएँ – 'साकेत' 'जयद्रथवध' 'पंचवटी' 'यशोधरा' द्वापर आदि प्रबन्धकाव्य है। इसी प्रकार अयोध्या संह उपाध्याय

द् ववेदी युग की प्रमुख वशेषताएँ

5 वर्ण्य वषय का क्षेत्र वस्तार :-

द् ववेदी युग में वर्ण्य वषय का अदभुत वस्तार हुआ। उसमें अपार वै वध्य और व्यापकत्व आया। अनेक नूतन वषयों को भी काव्य में स्थान मला अनेक छोटे-छोटे साधारण वषयों पर क वताएं लखी गई। कोई ऐसा क्षेत्र नहीं रहा जिधर क वयों की दृष्टि न गई हो प्रकृति भी स्वतंत्र रूप से काव्य का वषय बनी मै थलीशरण गुप्त, हरिऔध, रामचंद्र शुक्ल, रामनरेश त्रिपाठी, गोपाल शरण संह आदि के काव्य में बड़ा मनोहारी प्रकृति चत्रण मलता है। यदय प द् ववेदी युगीन प्रकृति चत्रण में भी पर्याप्त स्थूलता है। कल्पेना वैभेव का अभाव है फर भी उसमें यथार्थता एवं ताजगी है इस संदर्भ में निम्न कथन उल्लेखनीय हैं-

दिवस का अवसान समीप था

गगन था कुछ लोहित हो चला।

द् ववेदी युग की प्रमुख वशेषताएँ

6 हास्य व्यंग्य काव्य

भारतेंदु युग में जैसे जिंदादिली चालबाजी और फक्कड़पन इस युग में नहीं रह गया था। अतः उस युग के समान हास्य व्यंग्य पूर्ण कै वता का प्रचुर्य द् ववेदी युग में नहीं है। इस दिशा में जितना कुछ लखा भी गया है वे द् ववेदी जी के व्यक्तित्व के प्रभाव से अपेक्षाकृत संय मत और मर्यादित है। हास्य और व्यंग्य के वषय राजनीतिक शोषण, सामाजिक कुरीतियां, धर्माडंबर, व्य भचार आदि है। बाल मुकुंद गुप्त इस युग के सशक्त व्यंग्यकार हैं उन्होंने तत्कालीन वायसराय लॉर्ड कर्जन को अपने व्यंग्य और हास्य का प्रमुख वषय बनाया। एक बार कर्जन ने भारत वा सयों को झूठा कहा उसे लक्ष्य करके गुप्त जी ने तीखा प्रहार कया है-

हमसे सच की सुनो कहानी जिससे मारे झूठ की नानी

सच है स्मरण देश की चीज तुमको उसकी कहां तमीज।

द् ववेदी युग की प्रमुख वशेषताएँ

7 सामान्य मानवता

पूर्ववती काव्य में असामान्य ईश्वर अवतार राजा सामंत या नायिकाओं आदमी को ही स्थान मला था कंतु इस युग की क वता में सामान्य मानव को यह गौरव प्राप्त हुआ। मानव मात्रा के सुख-दुख और परिस्थितियों का वर्णन काव्य में बड़े ही सहज भाव से कया जाने लगा। दीन-हीन, कृषक तथा वधवा के दुखों का भी बडा कारू णक वर्णन इस काल के क वयों ने कया। वधवाओं के कष्ट पूर्ण जीवन और शक्षा वहीन नारियों की दुर्दशा की ओर भी इस युग के क वयों ने संकेत दिए हैं। वस्तुतः मानव सुलभ सहानुभूति ही इस प्रकार की क वताओं की प्रेरक भावना है। इसी भावना से प्रेरित होकर हरिऔध नीम कहते हैं-

आप आंखें खोल कर दे खए

आज जितनी जातियां है सर धरे

पेट में उनकी पड़ी दिखलाएंगी

जातियां कतनी ससकती या मारी।

द् ववेदी युग की प्रमुख वशेषताएँ

8 सभी काव्य रूपों का प्रयोग

द् ववेदी युग में काव्य क्षेत्र में प्रच लत प्रबंध मुक्तक प्रगीत आदि सभी काव्य रूपों में रचना हुई। कथा श्रत काव्य रचना क वयों को अ धक सुगम प्रतीत हुई। प्रयप्रवास, साकेत आदि महाकाव्यों का प्रणयन इसी युग में हुआ। हिंदी के अनेक श्रेष्ठ खंड काव्य भी इस काल में लखे गए। मुक्तक रचना की ओर भी इस युग के क व प्रवर्तक हुए। छोटे-छोटे वषयों को लेकर स्वतंत्र पदों की रचना वृहत परिमाण में हुई। द् ववेदी युग प्रगीतों का भी प्रणयन हुआ यदर्य प इस वधा का वास्त वक वकास तो द् ववेदी युग के बाद ही हुआ कंतु इस युग के क वयों ने भी इसे अपना लया था निम्न पंक्तियां उल्लेखनीय है -

केवल मनोरंजन ना क व का कर्म होना चाहिए

उसमें उ चत उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।

मै थलीशरण गुप्त।

द् ववेदी युग की प्रमुख वशेषताएँ

9 भाषा परिवर्तन

द् ववेदी युग में काव्य की मुख्य भाषा ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ी बोली बन गई। आज खड़ी बोली के भाषा सौंदर्य और अ भव्यंजना क्षमता के दर्शन के पश्चात इसकी काव्योपयुक्तता ववादास्पद नहीं रह गई है कंतु द् ववेदी काल के पूर्व ऐसी बातें नहीं थी। द् ववेदी युगीन काव्य ने इस क्षमता को निर्मल करे दिया। यदय प आरंभ में खड़ी बोली काव्य नीरस तुकबंदी के अतिरिक्त कुछ नहीं था कंतु उसमें उत्तरोत्तर निखार आया। जयद्रत के वक्त की प्र सद् ध ब्रजभाषा के मोह का वध कर दिया गया। भारत भारती की लोक प्रयेता वजय भारती सदध हुई और काव्य की भाषा पूर्णतः खड़ी बोली हो गई निम्न पंक्तियां उल्लेखनीय है

प्रेम स्वर्ग है स्वर्ग प्रेम है प्रेम अशंक अशोक

ईश्वर का प्रतिबिंब प्रेम है प्रेम ह्रदय आलोक।

द् ववेदी युग की प्रमुख वशेषताएँ

10 खड़ी बोली की प्रतिष्ठा

द् ववेदी युग में काव्य की मुख्य भाषा खड़ी बोली के रूप में प्रतिष्ठित होगी अब तक जो खड़ी बोली भारतेंदु युग में गद्य के क्षेत्र में ही प्रयोग की जा रही थी, वह द् ववेदी युग में आकर गद्य एवं पद्य दोनों के लए समान रूप से उपयोगी हो गई। द् ववेदी जी के प्रयास से ही अव्यवस्थित खड़ी बोली परिमार्जित हुई।

द् ववेदी युग की प्रमुख वशेषताएँ

11 श्रृंगार के वकृत रूप का बहिष्कार

प्रीति युगीन काव्य प्रव ृत्तयों के अनुवर्तन के कारण श्रृंगार का जो रूप भारतेंदु युग में अपनाया गया था वह द् ववेदी युगीन क वयों के लए ग्राह्य ने था। उन्होंने श्रृंगार स्वच्छ एवं सुंदर रूप को की काव्य वषय बनाने पर जोर दिया।

द् ववेदी युग की प्रमुख वशेषताएँ

12 प्रकृति चत्रण

द् ववेदी युगीन काव्य ने अपने काव्य में प्रकृति का स्वतंत्र चत्रण कया है। प्रकृति आलंबन, उद्दीपन एवं वातावरण निर्माण आदि रूपों का मनोहारी वर्णन इनके काव्य में मलता है।

13 छंद वधान

भाषा के अतिरिक्त छंद तथा भाव के क्षेत्र में भी परिवर्तन हुआ। क वत्त, सवैया जैसे पुराने छंदों का बहिष्कार इस युग में कया गया और संस्कृत छंदों को अपनाया गया। कछ नये छंद भी प्रयोग में

द् ववेदी युग की प्रमुख वशेषताएँ

निष्कर्ष

भारतेंदु युग में राज भक्ति और देश भक्ति के साथ समाज सुधार की क वता होती थी। साथ ही काव्य की भाषा ब्रज भाषा थी और गदय की भाषा खड़ी बोली पर द् ववेदी युग की क वता राष्ट्रीय सांस्कृतिक क वता है इस युग की राष्ट्रीयता संप्रदायिकता और प्रांतीयता से उपर अति उदार और व्यापक राष्ट्रीयता है मातृभू म के लए सर्वस्व ब लदान स्वार्थ त्याग तथा पारस्पारीक वैषभ्मि य को दूर करने की अमूर्त प्रेरणा देकर इन क वयों ने राष्ट्रीय भावना को वक सत कया तथा तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलन को बल प्रदान कया। जहां उन्होंने सामाजिक कुरीतियों धा मक आडंबर ओ तथा निरर्थक रुढ़ियों पर जोरदार प्रहार कए वहां अपनी परंपरा के उपयोगी तत्वों का सबल समर्थन और पोषण भी कया। इस युग की क वता का संस्कृतिक पक्ष